International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक स्तर के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar

Principal

SGNSD College of Education

Uchana, Jind Haryana

परिचय :–

शिक्षा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। मानव जन्म से मृत्यु पर्यन्त किसी ना किसी रूप में शिक्षा ग्रहण करता रहता है। स्वामी दयानन्द के अनुसार– बच्चा माता के गर्भ से शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ कर देता है। जीवन की बगिया की सुन्दरता शिक्षा के बिना कुरूप ही दिखाई देती है। आँखें होते हुए भी मानव अन्धा हो जाता है। मानव रूपी चोले में वह पश और राक्षस जैसा व्यवहार करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा शब्द इतना गहरा है जिसे शब्दों में अंकित करना बहुत कठिन है। इसकी महत्ता का अनुभव किया जा सकता है, अभिव्यक्त नहीं।

मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा शब्द एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। मानव का विकास काफी हद तक शिक्षण क्रिया पर निर्भर करता है, क्योंकि इसी के द्वारा उसमें विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक परिवर्तन लाये जा सकते है। विभिन्न विद्वानों का मत है कि शिक्षा एक निरन्तर रूप में चलने वाली प्रक्रिया होती है। जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विकसित किया जा सकता है। शिक्षा की सहायता से ही एक मनुष्य में विभिन्न प्रकार की अर्न्तनिहित शक्तियों को विकसित किया जा सकता है। वास्तव में शिक्षा केवल विद्यालयों में ही प्रदान नहीं की जाती बल्कि एक मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार की शिक्षा को प्राप्त करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वह सभी क्रियाएं जिसके माध्यम से मनुष्य किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करता है या समाज में रहने के ढंग को सीखता है, उसे शिक्षा कहा जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मूल्य :–

हम दैनिक जीवन में बार–बार मूल्य या मूल्यों की बात करते है। इन्हें हम आदश, उचित व्यवहार पसन्द का विचार या व्यवहार मानते है। इन्हें हम अपने व्यवहार के मार्गदशक तत्व मानते है।

मूल्य वह है जिसका महत्व है, जिसके पाने के लिए व्यक्ति और समाज प्रयास करते है, जिसके लिये वे जीवित रहते है और जिसके लिए वे बड़ से बड़ा त्याग कर सकते है। अर्थशास्त्र मूल्य की परिमाणात्मक व्याख्या करता है उसके लिए मूल्य वह है जिसकाव्यापारिक उपयोग हो, जिसका विनिमय किया जा सकता है। सामान्य रूप से इच्छाओं को सन्तुष्ट करने वाली वस्तुएँ मूल्यवान कहलाती है।

भारत में माध्यमिक शिक्षा –

कक्षा 6 से 12वीं कक्षा तक (3+2+2) वर्षीय अवधि की अवर माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाएं प्रचलित माध्यमिक कक्षाएं है। 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की पूरक माध्यमिक कक्षा अथवा बुनियादी कक्षाएं 6 से 11 कक्षा तक 3 + 3 वषीय अवधि की अवर माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाएं चलाने के प्रयास हो रहे है।

अवर प्राथमिक कक्षा (1से 4 या 5) के पश्चात् उच्च प्राथमिक शिक्षा कक्षा (6 से 8) की व्यवस्था है। उत्तर प्रदेश में प्राथमिक स्कूल अलग है तथा इनका प्रबन्ध भी यही संस्था करती है, इसे मिडिल स्कूल के नाम से भी जाना जाता है। राज्य का शिक्षा विभाग इसकी परिक्षाओं का संचालन करता है। अब यह कार्य जिला स्तर पर किया जाता है। इसके पश्चात् माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था है। माध्यमिक हाई स्कूल में कक्षा 6 से 10 तक की व्यवस्था है। हॉयर सैकेण्ड़री स्कूलों में कक्षा 11 तक का प्रावधान है। उत्तर प्रदेशमें हाई स्कूल व इंटर कॉलेज की प्रथा है। इण्टर कक्षा की अवधि हाई स्कूल केबाद दो वर्ष है। एक पूरे इण्टर कॉलेज में कक्षा 1 से 12 तक की कक्षाएं होती है। दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में हायर सैकेण्डरी योजना है। माध्यमिक शिक्षा में छात्रों का आयु क्रम 11 स 17 वर्ष है। इस अवस्था को किशोर अवस्था कहते है। बच्चे का बनना व बिगड़ना इसी अवस्था में होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अनुशासन का अर्थ :–

अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है ''**आत्म नियन्त्रण** या **आत्म संयम**।'' इसमें व्यक्ति अपने आवेशों पर नियन्त्रण रखने की चेष्टा करता है। अनुशासन के लिए अंग्रेजी में डिसीप्लिन शब्द का प्रयोग होता है। जिसका हिन्दी में तात्पर्य है मानसिक अथवा नैतिक प्रशिक्षणसेव्यवहार कोनियन्त्रण में लाना।

जीवन को व्यवस्थित रूप से परिचालित करने का महत्वपूर्ण साधन अनुशासन है। नदी अपने किनारों के बीच बहती रहे तो स्वच्छ तथा उपयोगी समझी जाती है। यदि नदी किनारों को तोड़ दे तो बाढ़ का कारण बनती है, उत्पात मचाती है और भय उत्पन्न करती है। इसी प्रकार यदि व्यक्ति अनुशासन की सीमाओं में जीवन यापन करें तो उसे सभ्य समझा जाता है, यदि वह उन सीमाओं का उल्लंघन करे तो उसे असभ्य, आवास, दुष्ट और समाज के लिए अनुपयोगी समझा जाता है।

अनुशासनहीनता :–

अनुशासन ही सभ्यता की जननी है। जिस देश के विद्यार्थी जितन अनुशासित होंगे वह देश निश्चित रूप से उन्नति करेगा। इसके विपरीत यदि देश के छात्र अनुशासनहीन होंगे तो राष्ट्र के अविकसित रहने के साथ उनको विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा। देश के शिक्षा जगत् में शैक्षिक माहौल की गिरावट में छात्रों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। आज के छात्र को कक्षा–शिक्षण में कोई रूचि नहीं रह गई है। वह सड़क पर घूमने, राजनीति में भाग लेने, प्रदशन करने, हड़ताल करने, गुण्डागर्दीकरने, मोटरगाड़ियों सेजलूस निकालने, शीश तोड़ने, कम्प्यूटरों पर पत्थर फैकने, लाइब्रेरी की किताबों को फाड़ देने आदिमें लगरहते है।

आज विश्वविद्यालयों अथवा महाविद्यालयों में राजनैतिक हस्तक्षेप छात्र–अनुशासनहीनता को उत्पन्न करने में अपनी सहायता प्रदान कर रहा है। कई शिक्षक व छात्र राजनैतिक संगठनों से जुड़े रहते है जो कि शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों को ओर भी अधिक जटिल बना देते है। हमारी शिक्षा योजनाएं शत प्रतिशत वास्तविक नहीं है। यही कारण है कि यछात्रों को मार्गदशन देने में भी असमर्थ है। शिक्षा संस्थाएं हमारी राष्ट्रीय सम्पति है परन्तु इन संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी अपनोमांगों को मनवाने के लिए विभिन्न व विघटनकारी कार्यों में शामिल हो जाते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अगर अनुशासनहीनताकी यही स्थिति बनी रही तो देश का भविष्य कौन संभालेगा ? इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा जा सकता है कि विद्यालय/शिक्षा संस्थाएं ही इस में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

अध्ययन का औचित्य :–

मानवता आज दोराहे पर खड़ी है। मानव धर्म के बुनियादी मूल्य जैसे शान्ति, सौहार्द, सहिष्णुता, त्याग, प्रेम व स्नेह आज कमजोर होते जा रहे है। भौतिकवाद की आंधी से आज विश्व इसी आंधी दौड़ में मानवता व मानव मूल्यों को पीछे छोड़ रहा ह। भारतवर्ष ने निसंदेह आज विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में असीमित उन्नति हासिल की है। भारत की गिनती विश्व मे समस्त क्षेत्रों में चुनिंदा देशां में होती है। किन्तु इस उन्नति का दूसरा पहलू निराश करने योग्य है। प्राचीनकाल का गौरवमयी इतिहास जो हमारी धरोहर है। हमें विश्व की प्राचीन संस्कृतियों का दर्जा देता है। हमारे उपनिषेदों में हमें ''**वसुधैव कुटम्बकम्**'' अर्थात सारा संसार मेरा परिवार सिखाया जाता है। इसके बावजूद हम कभी धर्म, कभी क्षेत्र, जाति, भाषा के नाम पर आपस में लड़ते है। गरीबी, महामारी, कुपोषण, बेरोजगारी, सामाजिक अन्याय व अकाल आदि बड़े मुददे हमारे विद्यार्थी वर्ग को अनुशासनहीन बना देत है।

समस्या कथन :–

''माध्यमिक स्तर के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।''

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :–

1. माध्यमिक शिक्षा –माध्यमिक शब्द का अर्थ है मध्य की। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इनके लिए सैकेण्डरी शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका अर्थ है – दुसरे स्तर की। पहले स्तर की प्राथमिक और उसके बाद दुसरे स्तर की यह सैकेण्डरी शिक्षा। आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होती है जो अपने में पूर्ण ईकाई होती है।

2. छात्र :–बालक को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु मानते है। शिक्षण प्रक्रिया में बालक को पूर्णरूपेण समझे बिना शिक्षण कार्य सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. अनुशासनहीनता :–अनुशासनहीनता वह व्यवहार है जो सामाजिक मानकों के अनुरूप पूर्ण नहीं किया जाता। कर्त्तव्य एवं अधिकारों का सही प्रयोग नहीं होता। जिससे समाज को नुकसान पहुँचे, ऐसे व्यवहार तथा कार्य को अनुशासनहीनता कहते है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
4. माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों व छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
6. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों व छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
7. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों व शहरी छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।
8. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन की परिकल्पनाएं –

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों व छात्राओं के अनुशासनहीनता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों व छात्राओं के अनुशासनहीनता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों व शहरी छात्रों के अनुशासनहीनता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं के अनुशासनहीनता के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन की परिसीमाएं :–

1. यह शोध फतेहाबाद जिले के टोहाना खण्डतक ही सीमित रखा गया।
2. यह अध्ययन कार्य ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों तक सीमित रखा गया।
3. इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के छात्रों की अनुशासनहीनता का अध्ययन किया गया।

अध्ययन की अनुसंधान विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्रों ने बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन की स्थिति का पता लगाने का प्रयास किया गया। अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए चुने गए विद्यार्थियों से सम्पर्क करना आवश्यक था तथा इनसे सम्पर्क स्थापित करने के लिए सर्वेक्षण विधि बहुत उपयुक्त थी। अतः अध्ययनकर्त्ता द्वारा अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि को चुना गया।

अध्ययन की जनसंख्या :–

अध्ययन की जनसंख्या के रूप में परिमित जनसंख्या की प्रकृति को स्वीकार करते हुए फतेहाबाद जिले के टोहाना खण्डके 10 ग्रामीण व 10 शहरी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को इस अध्ययन की जनसंख्या के रूप में स्वीकार किया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन अभिकल्प :–

प्रस्तुत अध्ययन में एक शाट केस अभिकल्प का चयन किया गया। क्योंकि इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं उनके कारणों के अध्ययन का समूह लिया गया। इस समूह पर कोई परीक्षण या तुलना नहीं की गई। बल्कि शिक्षण संस्थानों के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं उनके कारणों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने का प्रयास किया गया।

अध्ययन न्यादश :–

प्रस्तुत शोधकार्य में फतेहाबाद जिले के टोहाना खण्डके 10 ग्रामीण व 10 शहरी माध्यमिक विद्यालयों के 100 छात्रों व 100 छात्राओं कान्यादर्श लिया गया।

अध्ययन उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्त्ता ने आंकड़ो का सग्रह करने के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली :–

प्रस्तुत अध्ययन में बन्द प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। जिसके माध्यम से माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों का अध्ययन किया गया। स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए सदस्यों को दिए गए विकल्पों में से एक विकल्प चुनना होता है, जो अपेक्षाकृत सरल होता है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ :–

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्न प्रकार की सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया।

(क) माध्य (डमंद) :–

माध्यमिक स्तर के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन करने हेतु स्वयं निर्मित प्रश्नावली के माध्यम ये प्राप्तांको का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य समको के सेट का सारे मूल्यों के योग को मूल्यों की कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

$$\text{माध्य} = M = \frac{\sum X}{N}$$

ड त्र माध्य योग

Σत्र योग वितरण में समक

X त्र वितरण में समक

N त्र समकों की संख्या

(ख) मानक विचलन (जंदकंतक कमअपंजपवद):–

विद्यार्थियों के प्राप्तांको का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक विचलन निकाला जाता है।

मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गो के वर्गमूल का औसत है। प्रतिदर्श का मानक विचलन

$$SD = \sigma = \frac{\sqrt{\sum d^2}}{N}$$

σ त्र प्रतिदर्श का मानक विचलन

क त्र यथा प्राप्त आंकड़ो का मध्य बिन्दु से विचलन

छ त्र मापों की संख्या

$\sqrt{\sum d^2}$ त्र प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल

(ग) टी टैस्ट (ज्.ज्मेज):–

दो समूहों की तुलना करने के लिये टी–टैस्ट लगाया गया है।

$$T\text{-}Test = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2 + \sigma_2^2}{N1 + N2}}}$$

$ड_1$ त्र मध्यमान पहले ग्रुप का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

$ड_2$ त्र मध्यमान दूसरे ग्रुप का

$σ_1$ त्र प्रमाणिक विचलन पहले ग्रुप का

$σ_2$ त्र प्रमाणिक विचलन दूसरे ग्रुप का

$छ_1$ त्र पहले ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

$छ_2$ त्र दूसरे ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

अध्ययन के परिणाम : –

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों में बढती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन किया गया। जिसमें 50 छात्रों को संख्या के रूप में लिया गया है। जिसके प्राप्त अंकों का मध्यमान 35.56 हैं। इसका प्रमाणिक विचलन 2.61 हैं तथा इनका प्रतिशतांक मान 72 हैं।

2. माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन एवं विवेचन किया गया। जिसमें 50 छात्राओं को संख्या के रूप में लिया गया है। जिसके प्राप्त अंकों का मध्यमान 34.88 है। इसका प्रमाणिक विचलन 2.65 हैं तथा इनका प्रतिशतांक मान 70 हैं।

3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन एवंविवेचन किया गया। जिसमें 50 छात्रों को संख्या के रूप में लिया गया है। जिसके प्राप्त अंकों का मध्यमान 31.2 हैं। इसका प्रमाणिक विचलन 5.47 हैं तथा इनका प्रतिशतांक मान 63 हैं।

4. माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन एवं विवेचन किया गया। जिसमें 50 छात्राओं को संख्या के रूप में लिया गया है। जिसके प्राप्त अंकों का मध्यमान 32.28 हैं। इसका प्रमाणिक विचलन 4.74 हैं तथा इनका प्रतिशतांक मान 65 हैं।

5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में बढती अनुशासनहीनता के स्तर एंव कारणों का अध्ययन किया गया है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं को संख्या के रूप में लिया गया है। इन विद्यालयों के छात्रों एंव छात्राओं को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस सारणी के आधार पर विश्लेषण किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों छात्र एवं छात्राओं में अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों के प्राप्त अंकों का मध्यमान 35.56 और 34.88 हैं। तथा इसका प्रमाणिक विचलन 2.61 एवं 2.65 है। इसके स्तर एवं कारणों के आधार पर df 1.96 इसका 't' मान 2.70 है जो कि सार्थकता स्तर पर 0.5 की सारणी के मान से अधिक हैं।

6. माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में बढती अनुशासनहीनता के स्तर एंव कारणों का अध्ययन किया गया है। इसमें शहरी क्षेत्र के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं को संख्या के रूप मे लिया गया है। इन विद्यालयों के छात्रों एंव छात्राओ को इस सारणी के आधार पर विश्लेषण किया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों छात्र एवं छात्राओं में अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों के प्राप्त अंकों का मध्यमान 31.2 और 32.28 हैं। तथा इसका प्रमाणिक विचलन 5.47 एवं 4.74 है। इसके स्तर एवं कारणों के आधार पर df 1.96 इसका 't' मान 1.38 है जो कि सार्थकता स्तर पर 0.5 की सारणी के मान से कम हैं।

7. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के छात्रों में बढती अनुशासनहीनता के स्तर एंव कारणों का अध्ययन किया गया है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र के 50 छात्र एवं शहरी क्षेत्र के 50 छात्रों को संख्या के रूप में लिया गया है। इन विद्यालयों के छात्रों को इस सारणी के आधार पर विश्लेषण किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों छात्रों का एवं शहरी छात्रों में अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों के प्राप्त अंकों का मध्यमान 35.56 और 31.2 हैं। तथा इसका प्रमाणिक विचलन 2.61 एवं 5.47 है। इसके स्तर एवं कारणों के आधार पर df 1.96 इसका 't' मान 10 है जो कि सार्थकता स्तर पर 0.5 की सारणी के मान से अधिक हैं।

8. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की छात्राओं में बढती अनुशासनहीनता के स्तर एंव कारणों का अध्ययन किया गया है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र की 50 छात्राओं एवं शहरी क्षेत्र की 50 छात्राओं को संख्या के रूप में लिया गया है। इन विद्यालयों की छात्राओ को इस सारणी के आधार पर विश्लेषण किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों की छात्राओं एवं शहरी छात्राओं में अनुशासनहीनताके स्तर एवं कारणों के प्राप्त अंकों का मध्यमान 34. 88 और 32.28 हैं। तथा इसका प्रमाणिक विचलन 2.65 एवं 4.74 है। इसके स्तर एवं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कारणों के आधार पर df 1.96 इसका 't' मान 7.40 है जो कि सार्थकता स्तर पर 0.5 की सारणी के मान से अधिक हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष : –

1. माध्यमिक स्तर परछात्रों के अनुशासनहीनता के स्तर एंव कारणों की विवेचन मेंपाया गया कि माध्यमिक स्तर परअनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का72% प्रभाव है।

2. माध्यमिक स्तर परछात्राओं का अनुशासनहीनताके स्तर एंव कारणा का विवेचन में पाया गया कि माध्यमिक स्तर परअनुशासनहीनताके स्तर एवं कारणों का 70% प्रभाव है।

3. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन एवंविवेचन किया गया जिसमें 63 प्रतिशत प्रभाव पाया गया है।

4. माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों का अध्ययन एवं विवेचन किया गया जिसमें 65% प्रभाव पाया गया है।

5. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में बढती अनुशासनहीनता के स्तर एंव कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।जिसमें निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता द्वारा पाया गया कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में बढ़ती अनुशासनहीनता के स्तर एवं कारणों में सार्थक अन्तर पाया गया ह। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार होती है।

6. माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में बढती अनुशासनहीनताके स्तर एंव कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता द्वारा पाया गया कि माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में बढ़ती अनुशासनहीनताके स्तर एवं कारणों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार होती है।

7. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के छात्रों में बढती अनुशासनहीनताके स्तर एंव कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।जिसमें निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता द्वारा पाया गया कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनताके स्तर एवं कारणों में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार होती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

8. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की छात्राओं में बढती अनुशासनहीनताके स्तर एंव कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।जिसमें निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता द्वारा पाया गया कि माध्यमिक स्तर की ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के छात्राओं में बढ़ती अनुशासनहीनताके स्तर एवं कारणों में सार्थक अन्तर पाया गया ह। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार हाती है।

शैक्षिक निहतार्थ : –

1. इस अध्ययन से विद्यालय के प्रशासन को यह फायदा होगा कि अनुशासनहीनता से छात्रों को अवगत करायगेतथा उनमें उच्च मूल्यों का विकास करेंगे।
2. शिक्षक भी अनुशासनहीनता को महाविद्यालय के प्रांगण में दूर करने का पयास करेंगे तथा छात्रों में नेतृत्व का विकास करेंगे।
3. इस अध्ययन में मूल्यों के गिरावट को दूर करने हेतु छात्रों के सामाजिक मूल्यों, दाशनिक मूल्यों, सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देकर अनुशासनहीनता के स्तर को कम किया जाएगा।
4. यह अध्ययन छात्रों के लिए दिशा–निर्देश का काम करेगा, जिससे छात्रों कोअनुशासनहीनताक कारणों को दूर करने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रयास किया जाएगा।
5. इस अध्ययन के उपरान्त महाविद्यालयों में राजनैतिक हस्तक्षेप को कम किया जाएगा।

आगामी शोध के लिए सुझाव :–

1. विद्यालय स्तर के छात्र एवं छात्राओं में अनुशासनहीनता के कारणों एवं स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।
2. केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के स्तर एवं कारणों का अध्ययन किया जा सकता है।
3. केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के स्तर एवं कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. बी0 एड0 एवं व्यावसायिक महाविद्यालयों के स्तर एवं कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. शिक्षा महाविद्यालय एवं महाविद्यालय के स्तर एवं कारणों का अध्ययन किया जा सकता है।